WWJMRD 2020; 6(12): 22-24
www.wwjmrd.com
International Journal
Peer Reviewed Journal
Refereed Journal
Indexed Journal
Impact Factor MJIF: 4.25
E-ISSN: 2454-6615

डॉ. गीता दोडमणी
हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर, भारत

Correspondence:
डॉ. गीता दोडमणी
हिन्दी विभाग, शिवाजी विश्वविद्यालय
कोल्हापुर, भारत

डॉ. शोभनाथ पाठक कृत एकलव्य: उद्दात विचारों की अवधारणा

डॉ. गीता दोडमणी

सांराश
पौराणिक कथाएँ अनेक हैं, उनमें रामायण और महाभारत सर्वश्रेष्ट हैं । इन कथाओं में से प्रत्येक पात्र अपने-अपने स्थान पर योग्य है और सफल भी है चाहे वह पात्र प्रमुख हो या गौण । साहित्य का अर्थ ही 'हित करने वाला' है । बुराई के होने से ही अच्छाई का महत्व सामने आता है । 'अधर्म' है इसीलिए तो 'धर्म' को महत्व है उसी प्रकार 'असत्य' है इसीलिए तो 'सत्य' का स्थान सर्वोपरि है । रचनाकार उक्त सभी विचारों पर विचार करता है फिर अपनी अभिव्यक्ति कर पाता है । अपने विचारों को प्रकट करने हेतु अलग अलग पात्रों का निर्माण करते हैं फिर अपनी सृजनता को सफल बनाते हैं । 'एकलव्य' भी ऐसा ही एक महत्वपूर्ण पात्र है जिसे पाठकजी ने अपने विचारों के साथ प्रस्तुत करने का प्रयास किया है । एकलव्य की श्रेष्ठता अनन्य साधारण है । वह एक श्रेष्ठ धनुर्धारी है जो अछूत होने के कारण गुरु शिक्षा से वंचित रहता है लेकिन उसकी विशेषता यह है की गुरु द्रोण उसे शिक्षा देने से इंकार करने पर वह गुरु द्रोण की मिट्टी की प्रतिकृति तैयार करता है । हर रोज उस पुतले को ही वंदन करता है और रात दिन कठिन परिश्रम करके श्रेष्ठ धनुर्धारी बन जाता है । दुख की बात यह है की जब गुरु द्रोण यह बात जान जाते हैं कि अपने प्रिय शिष्य अर्जुन से भी श्रेष्ठ कोई दूसरा धनुर्धारी है तो वे छल करके गुरु दक्षिणा में 'एकलव्य' से अंगूठा माँग लेते हैं । विचार करने की बात यह है कि कोई गुरु इतना कठोर कैसे हो सकता है ? पाठक जी ने इस काव्य में छुआछूत को मिटाने का प्रयास तो किया ही है साथ ही साथ गुरु द्रोण की निर्धनता के कारण एक अच्छे गुरु की विवशता पर भी नजर डाली है । उसी प्रकार 'एकलव्य' की गुरु भक्ति को भी सर्वश्रेष्ठ दर्जा देते हुए गुरु-शिष्य के बीच के स्नेह को उजागर किया है और गुरु के प्रति समर्पित भाव पर प्रकाश डाला है । इस कृति के द्वारा 'एकलव्य' के उद्दात विचारों की अवधारणा को स्पष्ट किया है ।

Keywords: भील, हिरण्यधनु, आदिवासी, अमराई, धनुर्विद्या, कौरव-पांडव, अट्टहास, पारंगत, कंटकाकीर्ण आदि ।

कवि परिचय:
डॉ. शोभनाथ पाठकजी का जन्म 23 नवंबर 1937 में हुआ है ।
इनकी अनेक पुस्तके प्रकाशित हैं । देश की प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में ढाई हजार से अधिक लेख निबंध, शोधलेख आदि भी प्रकाशित हैं । पाठकजी की विशेषता यह है कि ये देश-विदेश की अनेक सांस्कृतिक-साहित्यिक संस्थाओं से संबंद्ध है । आपने देश-विदेश में विशेष व्याख्यान प्रस्तुत किए हैं । आपने आकाशवाणी से नियमित वार्ताओं का प्रसारण किया है । आप अखिल भारतीय प्राच्य विद्या परिषद और विश्व संस्कृत सम्मेलन के सदस्य रहे हैं ।

भूमिका:
आज भी विश्व में अनेक पौराणिक कहानियाँ, सुनने, पढ़ने तथा विविध माध्यमों द्वारा देखने को मिलती हैं। तकनीकी से जुड़ी अनेक सुविधाएँ होने के कारण आज असंभव कुछ भी नहीं है। बात आज की हो या बरसो पुरानी हो तकनीकी सुविधाओं के माध्यम से या ग्रंथ, पुस्तक आदि द्वारा ज्ञान प्राप्त होता है यह सबसे बड़ी उपलब्धि है। इसी कारण हमें पौराणिक बातों का ज्ञान प्राप्त करने में आज कठिनाई नहीं होती। आज की भागा-दौड़ी के जीवन में समय समय पर पुस्तके पढ़ने के लिए लोगों के पास समय नहीं है फिर भी कोई गम की बात नहीं है क्योकि प्रौद्योगिकी ने लोगों का काम आसान और सुविधाजनक बनाया है। इसी वजह से किसी-न-किसी रूप में बिता हुआ कल आज बनकर सामने खड़ा हो जाता है, फिर वह वाल्मीकि 'रामायण' हो या तुलसीदास का 'रामचरितमानस' , व्यास जी का 'महाभारत' हो या कुछ अन्य। रचनाकारों ने साहित्य के अंतर्गत ऐतिहासिक, पौराणिक घटनाओं को अपनी रचनाओं द्वारा जिवंत रखने का विविध प्रयास किया है। पौराणिक पात्रों को माध्यम बनाकर

आधुनिक युग के वास्तव को उजागर किया है और सफलता भी पाई हैं। रामायण, महाभारत, साकेत, युगंधर, सैरंध्री, बालीवध निर्वाण, शकुंतला जैसे अनेक रचनाएँ प्राप्त होती हैं, इन सभी में पाठकों का ध्यान आकृष्ट करने वाली कृति है 'एकलव्य' जिसके रचयिता हैं डॉ. शोभनाथ पाठक। इस कृति को पढ़ने पर इसके विविध पहलू सामने आते हैं। प्रस्तुत शोधलेख में 'एकलव्य' के उद्दातीकरण पर प्रकाश डाला गया है।

एकलव्य : उद्दात विचारों की अवधारणा :

शब्दकोश में उद्दात शब्द विविध अर्थो में प्राप्त होता हैं जैसे- ऊँचे स्वर में उच्चारण किया हुआ, दयावान, कृपालु, दाता, उदार, श्रेष्ठ, बड़ा, स्पष्ट, विशद, समर्थ आदि। उसी प्रकार उद्दातीकरण का अर्थ है- उद्दात स्वरूप प्रदान करने की क्रिया या भाव; संस्कार सुधार चरित्र को ऊँचा बनाना आदि।1

अनेक ने 'दलित' या 'दलित विमर्श' आदि को लेकर चर्चा की है । साहित्यिक दृष्टिकोण से यदि रचनाओं को समझने का प्रयास करते हैं तो लोग 'दलित' या 'दलित विमर्श' वाली बात पर अड़े रहकर चर्चा नहीं करेंगे । कहना अनुचित नहीं होगा कि विमर्श विषय लोगों के लिए जैसे एक फैशन बना है। लोगों के विचार कृति के पात्रों के विचारों के साथ नहीं मिलती बल्कि कुछ अलग ही रूप धारण कर लेती हैं और निरर्थक चर्चा में फैल जाती हैं जिसके कारण समाज में और एक विमर्श उत्पन्न होकर सामने आने से नहीं चुकता है। फिर यह परिस्थितियाँ अपनी मूक भाषा में चिल्ला उठती हैं, शोर मचाती हैं। सुननेवाले इस चिल्लाहट को अपनाते हैं और कुछ उसका फायदा उठाते हैं। कुछ उस पर विचार करते हैं तो कुछ उसका आस्वाद लेते हैं। अर्थात लेखक जब कृति की रचना करता है तब उसके विचार केवल वही जानता है लेकिन जब वह व्यष्टि न रहकर समष्टि बनती है तो उसके साथ विविध विचारों का जुड़ना तो स्वाभाविक ही है। 'शोभनाथ' पाठक जी का 'एकलव्य' भी कुछ इसी प्रकार है। प्रस्तुत कृति पौराणिक पात्र एकलव्य तथा द्रोणाचार्य से संबंधित है। एकलव्य की कथा तो जैसे सभी को ज्ञात है। गुरु तथा शिष्य के बीच नाता कितना गहरा और आदर्श होना चाहिए इसका एक प्रमाण हमें प्रस्तुत कृति से प्राप्त होता है। कथा को पाठक जी ने आधुनिक बोध के साथ जोड़ने का प्रयास किया है। पौराणिक तथा ऐतिहासिक पात्रों द्वारा विविध परिस्थितियों को उजागर करने का काम साहित्यकार करते रहते हैं। अपने अनुभवों में स्वानुभव तथा परानुभाव को डालते हैं साथ ही कल्पना शक्ति की मदत से उसे रोचक बनाते हैं। क्यों कि कोई भी रचना क्यों न हो भूतकालीन, वर्तमान कालीन या भविष्य कालीन, उसकी सृजनात्मकता के पीछे विशिष्ट उद्देश्य होता है और यही उद्दिष्ट वास्तविकता को उजागर करने में सफलता प्राप्त करती है।

'एकलव्य' की कथा भारतीय संस्कृति से जुड़ी होने के कारण और इसमें पौराणिक पात्रों के माध्यम से आधुनिक युग के मानव संवेदनाओं को जगाने का प्रयास होने के कारण यह कथा अभूतपूर्व है ऐसा कहना अनुचित नहीं होगा। इस कथा का मुख्य आव्हान है- छुआछूत का अंत तथा शिक्षा की व्यवस्था में समानता की माँग। प्रस्तुत कथा का नायक एकलव्य दलित होने के कारण उसका शिक्षा पाने का अधिकार छीना गया । लेकिन एकलव्य का दृढ़ निश्चय तथा उद्दात दृष्टिकोण उसे शांत रहने नहीं देता और न ही वह हार मानता है। अपने पिता हिरण्यधनु को चिंतित देखकर एकलव्य कहता है –

"शिक्षा का संकल्प उन्हीं से/ धनुर्वेद अपनाऊँ।
श्रद्धा-स्नेह गुरु भक्ति से/ उनको शीश नवाऊँ।
समदर्शी आचार्य, अलौकिक/पुरुष विश्व में होता।
जो समत्व के सम्बल से/ है सतत समाज संजोता।"[2]

उपरोक्त पक्तियों के माध्यम से कवि ने एकलव्य द्वारा अपने उददात विचारों को प्रस्तुत किया है। छुआछूत के दौर में एकलव्य के विचारों को रख कर कवि ने निम्न जाति के लोगों में हार न मानने की प्रवृत्ति को दृढ़ करने का प्रयास किया है और साथ ही एकलव्य के महान विचार तथा दृढ़ निश्चय को कायम रखा है जो प्रेरणादायी है। सभी जानते ही होंगे लोगिनुस की महत्वपूर्ण उक्ति है – "औदात्य महान आत्मा कीs प्रतिध्वनि है।"[3] यहाँ कवि ने इसी का जिक्र किया है। एकलव्य के विचारों से प्राप्त होनेवाला लाभ निश्चित ही शिष्य के मन में गुरु के प्रति आदर, सम्मान भर देनेवाले हैं। गुरु के प्रति स्नेह, श्रद्धा रखना ही अपने कार्यों को बढ़ावा देना है। यह स्नेह ही सच्चे शिष्य की प्रतिध्वनि है यह कहना उचित ही होगा। एकलव्य अपने गुरु में समत्व के भाव देखते हैं जो हमेशा समाज को संजोते रहते हैं। एकलव्य अपने गुरु को ही अपना सहारा मानते हुए कहते हैं-

"गुरु-गरिमा की तुला गुरुत्तर/ गुरुवर वही हमारे
श्रद्धा भक्ति उन्हीं पर अर्पित/ अपने वही सहारे।"[4]

गुरु के प्रति आदर और उच्च भाव व्यक्ति को महान बनाता है। व्यक्ति के उच्च विचार, त्याग की भावना अपने आप को समर्पित करने के भाव, संकल्प, निष्ठा आत्मबलिदान, परोपकार आदि बाते मनुष्य को श्रेष्ठ बनाती है। श्रेष्ठता को कायम रखने हेतु एवं स्वयं से प्रामाणिक रहने की प्रेरक शक्ति मनुष्य में हो तो हालात कैसे भी क्यों न हो विजय पाकर अग्रेषित होने की कोशिश करता है। एकलव्य के उददात विचारों को यहाँ प्रस्तुत किया है –

"जहां लक्ष्य की प्राप्ति/ मनुज का अटल ध्येय है।
चूमे चरण सफलता/ गरिमा अनुपमेय है।
साधन पथ तो/ सदा कंटकाकीर्ण रहा है।
कर्मयोग से वही/ सुखद विस्तीर्ण रहा है।
त्याग-तपष्या-लक्ष्य प्राप्ति/सम्बल है अपना
इस पर ही अवलंबित है/जीवन का सपना।"[5]

समाज में जीवित हर मानव प्राणी के लिए यह एक सशक्त संदेशा कवि ने दिया है । अपनी लक्ष्य की प्राप्ति के लिए व्यक्ति को अटल प्रयास करना चाहिए तभी सफलता की गरिमा का रसपान व्यक्ति कर सकता है। इसके लिए कर्म, त्याग, तपष्या, लक्ष्य आदि बातों की ओर देखने की दृष्टि भी सकारात्मक हों तो कामयाबी कदम चूमें बिना नहीं रहेगी। सफलता की सही परिभाषा अथक परिश्रम है ऐसा कहना उचित होगा। इसके लिए कवि ने एकलव्य का उदाहरण समाज के सामने रखा है और समाज को जागृत किया है। कवि के ये उद्दात विचार लोगों को सोचने पर मजबूर करती है और प्रेरणा भी देती है।

अपनी सृजन कला को और जादा सजाने सवारने हेतु रचनाकर उसमें विविध अलंकारों को भरता है और अपनी भाषा को सुंदर एवं समृद्ध बनाता है। अलंकारों से समृद्ध शब्द भावों की गहराई को अभिव्यक्त करती है। यही सुंदरता उद्दात विचारों के सहायक होते हैं। इससे विचारों को अद्भुत बल मिलता है और भाषा सौंदर्य बढ़ जाता है। यही वजह है की कवि के विचारों में चार चाँद लग जाते हैं। इस विषय में लोगिनुस का कथन है "अलंकार सर्वाधिक प्रभावशाली तब होता है जब इस बात पर ध्यान ही न जाय कि वह अलंकार है।"[6] एकलव्य काव्यकृति में यह प्रभावशीलता है तभी तो शब्दों से उद्दात भाव प्रकट हुये हैं। उदाहरण के रूप में जैसे-

"अद्भुत प्रतिभा का प्रसून/ खिल गया अचानक
चिनगारी का रूप/भभक कर हुआ भयानक।"[7]

उसी प्रकार- "गुरु प्रतिमा का पूजा अर्चन/श्रद्धा सुमन, आस्था जल।
भक्ति भाव से करूँ वंदना/ तन मन काया से निर्मल।"[8]

उद्दात विचारों को प्रकट करने वाली ऐसे अनेक उदाहरण 'एकलव्य' में प्राप्त होते हैं। अलंकारिक शब्द भावों की सौंदर्यता के साथ-साथ रचनाकार की प्रतिभा को भी बढ़ाती है। औदात्य विविध

शैलियों का विशेष गुण है। इसमें भावोत्पादक गुण होते हैं। उद्दात विचार समय तथा प्रसंगानुसार चमत्कार निर्माण करता है जिसमें पाठक निमग्न हों जाता है।

'एकलव्य' काव्य कृति में कवि ने कई स्थानों पर 'द्रोण' के विचारों में भी उद्दात विचार भर दिये हैं। जैसे-

"सदाचार पर स्वर्ग झुका है/ सत्य सृष्टि का बल है।
श्रम साधना से विश्व बदलता/ श्रम युग का सम्बल है।
लगन-लाग से सब कुछ सम्भव, चारों विभव इसी से।
मानवता का मूल्य यही है, भेद न उचित किसी किसी से।"[9]

व्यक्ति के आचरण पर उसकी अच्छाई या बुराई निर्भर होती है। उच्च विचारों से भरे व्यक्ति के सामने स्वर्ग भी झुक जाता है। श्रम-साधना में विश्व को बदलने की ताकत होती है, क्योंकी सत्य ही सृष्टि का बल है। सदाचार और सत्य की ताकद मनुष्य को उच्च कोटी का बना देती है। एकलव्य का पराक्रम द्रोण को बोलने से नहीं रोक सकता । 'द्रोण' भावविवश होकर कौरव तथा पांडव के सामने एकलव्य के आचरण, श्रम, लगन, मानवता आदि गुणों का गौरव करते हैं। इससे 'द्रोण' के उद्दात भाव प्रकट होते हैं। 'द्रोण' की वाणी से उद्दात शब्द मोतियों से झंकृत हों जाते हैं। वही मोती एकलव्य के शब्दों से निसृत होते हैं जैसे-

"धन्य-धन्य हों गया आज मैं/ गुरुवर स्वयं पधारे,
गुरु चरणों की पावन रज से, जागे भाग्य हमारे।"[10]

अछूत मानकर जिस गुरु ने ठुकरा दिया था वही गुरु जब कुटियाँ में आते हैं तो एकलव्य की खुशी का ठिकाणा नहीं रहता। आनंद विभोर होकर एकलव्य बोल उठता है –

"अहो भाग्य, आगमन आपका/ अरुणोदय है, वन में।
अंतस में हों गया उजाला, घनीभूत जीवन में,
तन-मन-धन दक्षिणा आपकी/ जो चाहें अपनाये
आज्ञा दें, तत्काल चरण में क्या-क्या वस्तु चढ़ाये।"[11]

एकलव्य की आत्मसमर्पण की भावना मन को हिला देता है। गुरु के चरणों पर अपना सब कुछ निछावर कर देने वाले एकलव्य की ख्याति विश्व में सर्वश्रेष्ट है। गुरु 'द्रोण' द्वारा गुरु दक्षिणा में एकलव्य से अंगूठा माँगे जाने पर क्षण का भी विलंब न करते हुए एकलव्य गुरु दक्षिणा में अंगूठा दे देता है। यह प्रसंग तो पाठकों के मन छन्नी-छन्नी बना देता है। गुरु दक्षिणा देते हुए एकलव्य गुरु 'द्रोण' से बिनती करता है –

"तर-तर-तर-तर, खून बह रहा।आँखों से झर-झर पानी ।
इसे करे स्वीकार पूज्यवर। व्यर्थ न हों गुरुवर वाणी।
साध पूर्ण हों गयी हमारी/ दिव्य दक्षिणा यह देकर
जन्म सफल हों गया हमारा/ गुरु पधारे हैं घर पर।
इसे मांगकर नहीं लिया तो/ मैं पागल हों जाऊँगा।
गुरु को इसे समर्पित करके/ जीवन सफल बनाऊँगा।
प्रभुवर आज प्रसन्न र्हदय से/ तुच्छ भेंट स्वीकार करें।
एक शिष्य की श्रद्धा निधि को/ ग्रहण करें, संताप हरें।"[12]

सभी को पता है, तीरंदाजी में सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा हाथ का अंगूठा है। रात दिन अथक, कठोर परिश्रम करके जिसके बलबूते सफलता मिली थी वही महत्वपूर्ण हिस्सा गुरु द्वारा मांगा जाना सबसे बड़ी त्रासदी है किन्तु पाठक जी ने एकलव्य की उद्दातता को प्रकट किया है बिना एक पल भी न गवाते हुए तत्परता से गुरु की माँग पूरी की जाती है यह इस कृति की श्रेष्ठता है।

बावजूद इन सबके औदात्य के लिए भाषा सौन्दर्य होना जरूरी है। शब्दों में भव्यता, ओज, गरिमा, प्रवाह, अभिव्यक्ति कौशल आदि का होना आवश्यक है। अपने सुंदर शब्दों द्वारा उच्च विचारों की अभिव्यक्ति होना भी औदात्य है। पात्र के अनुकूल गरिमामई भाषा है। काव्य में विविध उपमाएँ भी हैं। काव्य की श्रेष्ठता गरिमामय भावों से बढ़ी है जिसका श्रेय शोभनाथ पाठक जी को जाता है। कृति की अंतिम पंक्तियाँ बहुत ही सराहनीय हैं ।

"गुरु शिष्य की गौरव गाथा का/ युग को अनुपम संदेश।
जाति-पांति का भेद मिटाओ/ यह अमृतमय है उपदेश।"[12]

निष्कर्ष : साहित्य से जन जागृती होती है । रचनाकार का सृजन इसी हेतु को सफल बनाने का कार्य करता है। पाठक जी ने 'एकलव्य' कृति द्वारा समाज से जाति-पांति का भेद मिटाने का प्रयास किया है साथ ही साथ पौराणिक पात्र एकलव्य के चरित्र का चित्रण किया है। इस कृति के माध्यम से कवि ने श्रम, साधना, दृढ़ता, संकल्प, त्याग, समर्पण आदि के महत्व को समजाया है। संयम तथा गुरु भक्ति लोगों को विचार करने के लिए प्रेरित करती है। पौराणिक कथाएँ तो अनेक हैं लेकिन हिन्दी साहित्य में पाठक जी की 'एकलव्य' काव्य कृति ने अपना अनूठा स्थान प्राप्त कर लिया है। यह काव्य कृति समाज को प्रेरणा देती है। प्रस्तुत काव्य उद्दात विचारों से परिपूर्ण है ।

संदर्भ सूची :

1. संपा. डॉ. शिवप्रसाद भारद्वाज शास्त्री, अशोक मानक हिन्दी शब्द कोश, (दिल्ली, अशोक प्रकाशन, सं-2003) पृ. 128
2. डॉ. शोभनाथ पाठक, एकलव्य, (दिल्ली, राजपाल अँड सन्स प्रकाशन) पृ. 16
3. निर्मला जैन,पाश्चात्य साहित्य चिंतन,(नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, आवृत्ति-2013) पृ. 75
4. डॉ. शोभनाथ पाठक, एकलव्य, (दिल्ली, राजपाल अँड सन्स प्रकाशन) पृ. 17
5. वही, पृ. 26
6. निर्मला जैन, पाश्चात्य साहित्य चिंतन,(नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, आवृत्ति-2013) पृ. 75
7. वही, पृ. 27 8. वही, पृ. 32 9. वही, पृ. 34 10. वही, पृ. 40 11. वही, पृ. 41 12. वही, पृ. 42-43 13. वही, पृ. 59